Chapter-7: बदलती हुई सांस्कृतिक परम्पराएँ

पुनर्जागरण :-

- एक फ्रांसीसी शब्द जिसका अर्थ है पुनर्जन्म पुनर्जागरण की शुरुआत सबसे पहले इटली में हुई। फिर यह रोम , वेनिस और फ्लोरेंस में शुरू हुआ।
- पुनर्जागरण ने लोगों में समानता की भावना पैदा की और समाज में व्याप्त अंधविश्वासों और रिवाजों पर हमला किया।
- पुनर्जागरण काल के साहित्य ने लोगों की राजनीतिक सोच में एक महान परिवर्तन लाया।

पुनर्जागरण पुरुष :- कई हितों और कौशल वाला व्यक्ति।

दस्तावेजों का दस्तावेज :-

चर्च द्वारा जारी किया गया एक दस्तावेज जो उसके सभी पापों के धारक को अनुपस्थित करने के लिए एक लिखित वादा की गारंटी देता है।

प्रिंटिंग प्रेस :-

- 1455 में , गुटेनबर्ग द्वारा प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार किया गया था ।
- यूरोप में 1477 में कैक्सटन द्वारा पहला प्रिंटिंग प्रेस स्थापित किया गया था ।

प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार से पुस्तकों की मात्रा बढ़ गई । इसने शिक्षा के प्रसार में भी मदद की ।

लियोनार्डो द विन्सी :-

- लियोनार्डो द विन्सी सबसे महान चित्रकारों में से एक थे । उनका जन्म वर्ष 1452 में फ्लोरेंस में हुआ था ।
- लियोनार्डो द विन्सी एक चर्चित कलाकार था । इसकी अभिरूचि वनस्पति विज्ञान , शरीर रचना विज्ञान से लेकर गणित शास्त्र और कला तक विस्तृत

थी इन्होंने ही मोना लीसा और दी लास्ट सपर जैसे चित्रों की रचना की थी ।

- मोना लिसा और द लास्ट सपर लियोनार्डो द विन्सी की सबसे प्रसिद्ध पेंटिंग थीं ।

गैलीलियों :-

गैलीलियों इटली का एक महान वैज्ञानिक था उसने दूरबीन यन्त्र का आविष्कार किया और खगोल शास्त्र के अनेक तथ्यों और रहस्यों का पता लगाया ।

यीशु की सोसायटी:-

1540 में इग्नेसियस लोयाला द्वारा यीशु की सोसायटी की स्थापना की गई थी । इसने प्रोटेस्टेंटिज़्म का मुकाबला करने का प्रयास किया ।

एन्ड्रयूज वेसेलियस :-

बेल्जियम मूल के एन्ड्रयूज वेसेलियस (1514 - 1564) पादुआ विश्व विद्यालय में आयुर्विज्ञान के प्रोफेसर थे । वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने सूक्ष्म परीक्षणों के लिये मानव शरीर की चीर फाड़ प्रारम्भ की ।

मानवतावादः-

- मानवतावाद 14 वीं शताब्दी में इटली में शुरू किए गए आंदोलनों में से एक था । पेट्रार्क को 'मानवतावाद के पिता के रूप में जाना जाता है । उन्होंने पादरी के अंधविश्वासों और जीवन शैली की आलोचना की ।
- मानवतावादी लोगों का तर्क था कि " मध्य युग में चर्च ने लोगों की सोच को इस तरह जकड़ कर रखा था कि यूनान और रोमन वासियों का समस्त ज्ञान उनके दिमाग से निकल चुका था ।
- मानवतावादी मानते थे कि मनुष्य को ईश्वर ने बनाया है , लेकिन उसे अपना जीवन मुक्त रूप से चलाने की पूरी आजादी है । मनुष्य को अपनी खुशी इसी विश्व में वर्तमान में ही ढूँढ़नी चाहिए ।

ट्रेडों के फलने - फूलने के कारण मिलान , नेपल्स , वेनिस और फ्लोरेंस को व्यापार केंद्रों का दर्जा प्राप्त हुआ ।

मानवतावादी विचारों के अभिलक्षण :-

- मानवतावाद विचारधारा के अंर्तगत मानव के जीवन सुख और समृद्धि पर बल दिया जाता था ।
- मानवतावाद के माध्यम से यह तथ्य स्पष्ट हो गया कि मानव , धर्म और ईश्वर के लिए ही न होकर हमारे अपने लिए भी है ।
- मानव का अपना एक अलग विशेष महत्त्व है ।
- मानव जीवन को सुधारने व उसके भौतिक जीवन की समस्याओं का समाधान करने पर बल देना चाहिए , मानव का सम्मान करना चाहिए । इसका कारण यह है कि मानव ईश्वर की सर्वोत्कृष्ट रचनाओं में से एक है ।
- पुनर्जागरण काल में महान कलाकारों की कृतियों और मूर्तियों में जीसस क्राइस्ट को मानव शिशु के रूप में और मेरी को वात्सल्यमयी माँ के रूप में चित्रित किया गया है । नि : संदेह मानवतावादी रचनाओं में धार्मिक भावनाओं का ह्रास पाया जाता है ।
- पुनर्जागरण काल में महान साहित्यकारों ने अपनी कृतियों में प्रतिपाद्य मानव की भावनाओं , दुर्बलताओं और शक्तियों का विश्लेषण किया है । उन्होंने अपनी कृतियों के केंद्र के रूप में धर्म व ईश्वर के स्थान पर मानव को रखा । इस युग की प्रमुख साहित्यिक कृतियों में डिवाइन कमेडी , यूटोपिया , हैमलेट आदि प्रसिद्ध हैं ।

मानवतावादी विचार की विशेषताये :-

- मानवतावादी वे गुरु थे जिन्होंने व्याकरण , अलंकार , काव्य , इतिहास और नैतिक दर्शन पढ़ाया ।
- उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि प्राचीन यूनानियों और रोमन लोगों की संस्कृति के संदर्भ में कानून का अध्ययन किया जाना चाहिए ।
- उन्होंने सिखाया कि व्यक्ति स्वयं अपने जीवन को धर्म , शक्ति और धन के अलावा अन्य माध्यमों से आकार दे सकते हैं ।

- इंग्लैंड में थॉमस मोरे और हॉलैंड में इरास्मस जैसे ईसाई मानवतावादियों ने आम लोगों से पैसे निकालने के लिए चर्च और इसके लालची रिवाजों की आलोचना की ।
- कुछ मानवतावादियों का मानना था कि अधिक धन पुण्य था और खुशी के खिलाफ नैतिक दोषी बनाने के लिए ईसाई धर्म की आलोचना की ।
- वे यह भी मानते थे कि इतिहास का अध्ययन मनुष्य को पूर्णता के जीवन के लिए प्रयास करता है । उन्होंने पंद्रहवीं शताब्दी की अवधि के लिए ' आधुनिक ' शब्द का इस्तेमाल किया ।

सोलहवीं शताब्दी में महिलाओं की स्थिति :-

- महिलाओं को कारोबार में परामर्श आदि देने का अधिकार नहीं था । दहेज का प्रबंध न होने के कारण लड़कियों को भिक्षुणी बना दिया जाता था ।
- सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी कम थी । व्यापारी परिवारों में महिलाओं को दुकानों को चलाने का अधिकार था ।
- कुछ महिलाओं ने बौद्धिक रूप से रचनात्मक कार्य किये जैसे : वेनिस निवासी कसान्द्रा फेदले जो यूनानी और लातिनी भाषा की विद्धवान थी ।
- मंटुआ की मार्चिसा ईसाबेला दि इस्ते जिन्होंने अपने पति की अनुपस्थिति में अपने राज्य पर शासन किया ।

इटली की वास्तुकला :-

- पंद्रहवीं शताब्दी में रोम के शहर के पुनरुद्धार के साथ इतालवी वास्तुकला विकसित हुई । रोम में खंडहरों को पुरातत्वविदों द्वारा सावधानीपूर्वक खुदाई की गई थी । इसने वास्तुकला में एक नई शैली को प्रेरित किया , शाही रोमन शैली का पुनरुद्धार - जिसे अब ' शास्त्रीय ' कहा जाता है ।
- पंद्रहवीं शताब्दी में रोम नगर को अत्यंत भव्य रूप से बनाया गया । यहाँ अनेक भव्य भवनों व इमारतों का निर्माण किया गया ।
- इटली की वास्तुकला के प्रारूप हमें गिरजाघरों , राजमहलों और किलों के रूप में दिखाई देते हैं ।

- इटली की वास्तुकला की शैली को शास्त्रीय शैली कहा जाता था । शास्त्रीय वास्तुकारों ने इमारतों को चित्रों , मूर्तियों और विभिन्न प्रकार की आकृतियों से सुसज्जित किया ।
- इटली की वास्तुकला की विशिष्टता के रूप में हमें भव्य गोलाकार गुंबद , भवनों की भीतरी सजावट , गोल मेहराबदार दरवाजे आदि दिखाई देते हैं ।

इस्लामी वास्तुकला :-

- इस्लामी वास्तुकला ने इमारतों , भवनों व मस्जिदों की सजावट के लिए ज्यामितीय नक्शों और पत्थर में पच्चीकारी के काम का सहारा लिया ।
- धार्मिक इमारतें इस्लामी वास्तुकला का सबसे बड़ा बाहरी प्रतीक थीं । स्पेन से लेकर मध्य एशिया तक की मस्जिदों , तीर्थस्थलों और मकबरों में एक ही मूल डिजाइन - मेहराब , गुंबद , मीनारें और खुले आंगन दिखाई दिए - और मुसलमानों की आध्यात्मिक और व्यावहारिक जरूरतों को व्यक्त किया ।
- इस्लामी वास्तुकला इस काल में अपनी चरम सीमा पर थी । विशाल भवनों में बल्ब के आकार जैसे गुंबद , छोटी मीनारें , घोड़े के खुरों के आकार के मेहराब और मरोड़दार (घुमावदार) खंभे आश्चर्यचकित कर देने वाले हैं ।
- ऊँची मीनारों और खुले आँगनों का प्रयोग हमें इस्लामी वास्तुकला के भवनों में नज़र आता है ।

इतालवी शहर मानवतावाद के विचारों का अनुभव करने वाले पहले व्यक्ति :-

इतालवी शहर मानवतावाद के विचारों का अनुभव करने वाले पहले व्यक्ति थे क्योंकि सबसे पहले यूरोपीय विश्वविद्यालय वहां स्थापित किए गए थे । पडुआ और बोलोग्ना विश्वविद्यालय ग्यारहवीं शताब्दी से कानूनी अध्ययन के प्रमुख केंद्र थे ।

- इसलिए , कानून अध्ययन का एक लोकप्रिय विषय था । हालाँकि , इसमें एक बदलाव था ; अब , यह पहले रोमन संस्कृति के संदर्भ में अध्ययन किया गया था ।

- इस शैक्षिक कार्यक्रम ने सुझाव दिया कि धार्मिक शिक्षण केवल ज्ञान नहीं दे सकता है, और समाज और प्रकृति के अन्य क्षेत्रों का विश्लेषण किया जाना चाहिए। यह संस्कृति 'मानवतावाद 'थी।

evidyarthi